प्रार्थना-प्रवचन

सूरनकोट (जम्मू-कश्मीर) २८-६-'५९

हम मुश्तरका काश्त नहीं चाहते, मुश्तरका मिलकियत चाहते हैं

आज कुछ लोगों ने हमारे पास दर्खास्तें दीं और कहा कि हमें जमीन मिलनी चाहिए। मैंने कहा कि कश्मीर में जमीन का मसला हल हो गया है और यहाँ बाबा के काम की जरूरत नहीं है, ऐसा कहा जाता है लेकिन हम यह देख रहे हैं कि मसला ज्यों का त्यों खड़ा है। यहाँपर २२ एकड़ का सीलिंग बना। लेकिन लोगों ने आपस में जमीन तकसीम कर ली। बाद में बची हुई थोड़ी-सी रद्दी जमीन सरकार को मिली है। सो मुजारों में तकसीम हुई। जब मुजारे हमसे मिलते हैं, तब कहते हैं कि मालिकों को चौथाई हिस्सा देने की तकलीफ अब नहीं रही। वे समझते नहीं कि उन्हें तकलीफ नहीं रही तो क्या मालिकों को कुछ खोना पड़ा? इस तरह हर कोई अपनी-अपनी बात सोचता है। मैं सबसे यही कहता हूँ कि हमें अब अलग-अलग नहीं सोचना चाहिए। मालिक, मुजारे और बेजमीन—सबका भला कैसे हो, इस बात पर सबको इकट्ठा होकर सोचना चाहिए। सबका भला करने की एक ही तरकीब हो सकती है। इसके लिए जमीन की मिलकियत मिटानी होगी। हमें समझना चाहिए कि मालिक वही (परमात्मा) एक हो सकता है। हम मालिक बनना चाहेंगे तो उसकी बराबरी में हो जायँगे। याने यह शिरकत हो जायगी, जो गलत बात है।

जमीन किसे देते हैं?

आज एक भाई ने हमसे एक मजेदार सवाल किया कि आप सबको जमीन देना चाहते हैं, लेकिन जो शख्स आलसी है, सुस्त है, काश्त नहीं कर सकता है, उसे जमीन क्यों देते हैं? मैंने कहा कि वह काहे जमीन लेगा? क्या वह मिट्टी खायेगा? जो मेहनत करना जानता है और चाहता है, वही जमीन माँगेगा। इसलिए हम हरएक के सिर पर जमीन लादना नहीं चाहते हैं, बल्कि जो काश्त करना जानता है, काश्त करना चाहता है और जिसके पास जिंदगी गुजारने का दूसरा जरिया नहीं है, उसीको हम जमीन देते हैं।

तकसीम करने की जिम्मेवारी

एक भाई ने अजीब सवाल किया कि जैसे आपको मुफ्त में जमीन मिली, वैसे ही क्या दूसरों को भी जमीन मुफ्त में ही दी जायगी? मैंने कहा कि जी हाँ मुफ्त में दी जायगी? उन्होंने कहा कि तकसीम का काम जिनके जिम्मे सौंपा है, वे गरीबों से पैसे लेकर जमीन देंगे, ऐसा मुझे लगता है। इसलिए आप इस बदमाशी को कैसे रोकेंगे? मैंने कहा कि जमीन को तकसीम करने की जिम्मेवारी मेरी है, आपकी है और जिन्होंने दान दिया, उनकी भी है। हमने डी० सी० पर जिम्मेवारी डाली है, डी. सी. पैसा लेकर जमीन दे, ऐसा नहीं कर सकता है। डी. सी. की मदद में दूसरे लोग भी जायँगे। कहीं एक भी केस गलत हुआ तो हमारे सामने रखो। उसकी बाकायदा तलाश होगी। हम कहना चाहते हैं कि ऐसी बात कतई नहीं होगी। नेकी और भलाई ही हमारी ताकत है। वही ताकत लेकर हम घूम रहे हैं। लोग यह धड़ाधड़ दान किस ताकत से दे रहे हैं? आज यहाँपर चार-पाँच भाइयों ने दान दिया तो किस ताकत से दिया? हम प्रेम से बात समझाते हैं और लोगों के दिलों को वह जँच जाती है। हम सादी बात समझाते हैं कि भाई, जैसे तुम्हें जीने का हक है, वैसे ही सबको है। सब अल्लाह की खिलकत है। अल्लाह चाहता है कि सब उसके बन्दे बनें और प्रेम से रहें।

हमारी कोई जिद नहीं

एक भाई ने सवाल किया कि आप मुश्तरका काश्त की बात करते हैं, लेकिन लोगों को उसमें दिलचस्पी नहीं है। अपनी जमीन हो तो काश्त करने में दिलचस्पी रहती है। मैं कहना चाहता हूँ कि हम मुश्तरका काश्त नहीं चाहते हैं, बल्कि मुश्तरका मिलकियत चाहते हैं। लोग अलग-अलग काश्त भी कर सकते हैं और मुश्तरका भी कर सकते हैं। इसके बारे में सब जगह अलग-अलग तजुरबे हो सकते हैं। इस मामले में हमारी कोई जिद नहीं है। हम इतना ही कहते हैं कि जमीन की मिलकियत अल्लाह की कुदरत के खिलाफ है। जब तक वह कायम रहेगी, तब तक समाज में कशमकश जारी रहेगी। चोरियाँ, डाके वगैरह चलते रहेंगे। देशे की दौलत नहीं बढ़ेगी। इसीलिए हम गाँववालों से कहते हैं कि आप जमीन की मिलकियत छोड़ दीजिये और सारे गाँव का जिम्मा उठाइये। गाँव के सब लोगों को खाना और रोजी देने का इंतजाम करना हमारा काम है—यों सोचकर मंसूबा बनाइये। जो पैदा होगा, हम सब बाँटकर खायेंगे। हम चढ़ेंगे तो साथ चढ़ेंगे और गिरेंगे तो साथ गिरेंगे। किसी अकेले को गिरने नहीं देंगे।

मैं नाम नहीं चाहता

मैं चाहता हूँ कि हर जमीनवाला जमीन दे। चन्द लोगों ने दिया और चन्द लोगों ने नहीं दिया तो उसके मनी यह हुआ कि अभी लोगों का दिल खुलना बाकी है। मैं किसीपर कोई दबाव नहीं डाल सकता हूँ। मैं तो अल्लाह का पैगाम सुनाता हूँ। मैं मानता हूँ कि कोई आज के देनेवाले हैं, कोई कल के देनेवाले हैं और कोई परसो के देनेवाले हैं। हर कोई देनेवाला है ही। यह मेरा भरोसा है। मैं आज यहाँ हूँ और कल यहाँसे चला जाऊँगा। मेरे जाने के बाद काम करनेवाले कुछ लोग निकलेंगे, तब तो यह झरना बहता रहेगा, नहीं तो यह कहा जायगा कि एक शख्स आया था और उसने प्यार की बात की, उसके जाने के बाद कुछ नहीं हुआ। इससे मेरा नाम होगा। लेकिन मैं नहीं चाहता हूँ कि मेरा नाम हो और आप सब बदनाम हों। मैं तो चाहता हूँ कि गाँव के लोगों का नाम हो। इसीलिए मैं उम्मीद करता हूँ कि मेरे जाने के बाद मेरा काम जारी रखनेवाले कुछ जवान खिदमतगार निकलेंगे। ◆◆◆

अनुक्रम

१. छोटे लोगों के दान से बड़े लोगों के दिलों में...
हमरे ३० जुलाई '५९ पृष्ठ ७५१
२. कुदरत और समाज की सेवा किये बिना खाना अपराध है
डेराकीगली २६ जून '५९ ,, ७५२
३. हम मुश्तरका काश्त नहीं चाहते, मुश्तरका...
सूरनकोट २८ जून '५९ ,, ७५४

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी
www.vinoba.in